इतिहास की आत्माएँ

बादशाह, मेरा दोस्त
शेफाली झा
चित्र चिनन

प्यारी आत्माएँ
रेखराज
चित्र के पी रेजी

एकलव्य

इतिहास की आत्माएँ

बादशाह, मेरा दोस्त

शेफाली झा

चित्र
चिनन

अँग्रेज़ी से अनुवाद
स्वयं प्रकाश

प्यारी आत्माएँ

रेखराज

चित्र
के पी रेजी

अँग्रेज़ी से अनुवाद
स्वयं प्रकाश

शृंखला सम्पादक
सुशील शुक्ल

एकलव्य

बादशाह, मेरा दोस्त

शेफाली झा

चित्र
चिनन

अँग्रेज़ी से अनुवाद
स्वयं प्रकाश

शृंखला सम्पादक
सुशील शुक्ल

एकलव्य
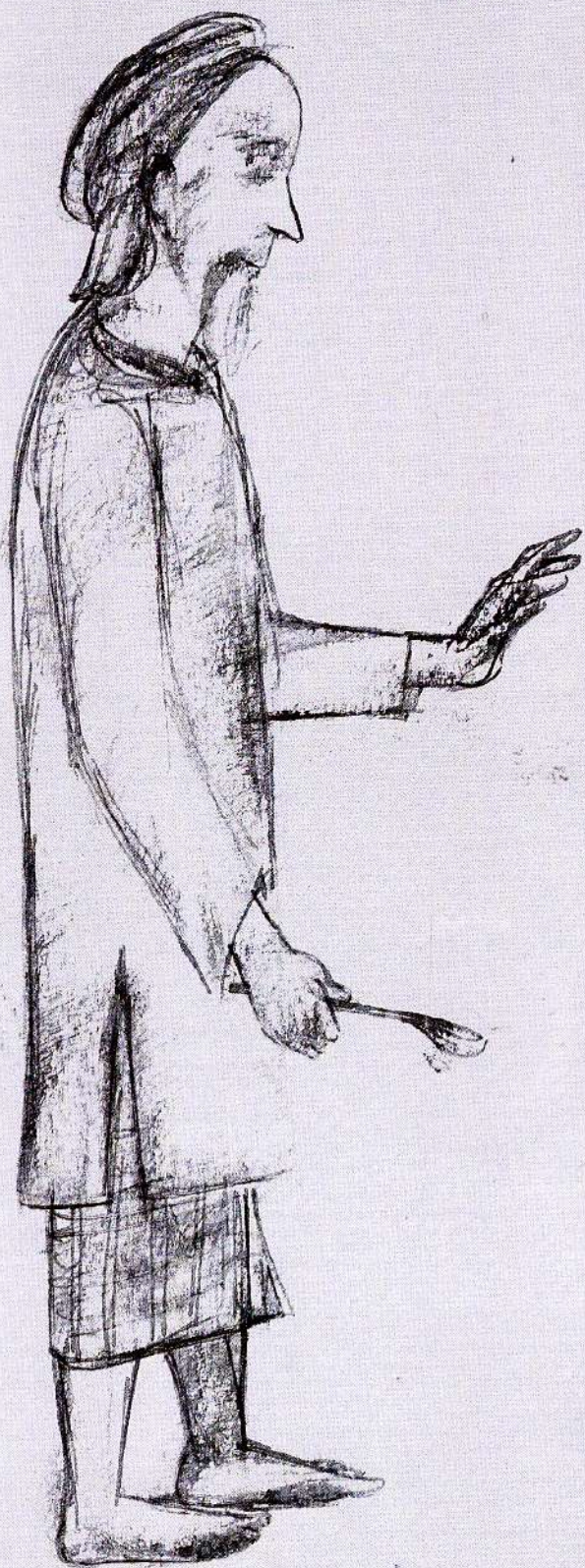
"तो! ये था वह ज़रूरी होमवर्क जो तुम्हें पूरा करना था!" अपने बेटे के पीछे से झाँकते हुए मोहम्मद अली मुसलियार बोले।

आदिल जो अपनी इतिहास की कॉपी में ड्रॉइंग बनाने में डूबा हुआ था, पिता की बात से इतना चौंक गया कि उसके हाथ से पेंसिल छूट गई। "अप्पा! आप कब आए? पता ही नहीं चला। मैंने होमवर्क करना शुरू तो कर दिया था लेकिन मुझे भूख लग रही थी तो मैंने सोचा आप आ जाएँ उसके बाद..."

"नहीं, नहीं, कोई बात नहीं। करते रहो। पूरा कर लो। अच्छा रेखाचित्र है। इतिहासकार नहीं बन पाए, कम से कम कलाकार तो बन ही जाओगे!" अप्पा हँसते हुए बोले।

"खाना तैयार है – मैंने जाने से पहले ही बना लिया था, अब बस उसे गरम करना है। वैसे एक बात बताओ, ये डरावना आदमी है कौन?" उन्होंने आदिल द्वारा बड़े ध्यान से बनाए जा रहे बड़ी-बड़ी मूँछों वाले काने आदमी के चित्र को देखते हुए पूछा। चित्र के ऊपर सुन्दर अक्षरों में कुछ पंक्तियाँ लिखी हुई थीं जिसका शीर्षक था – "1526, पानीपत की पहली लड़ाई।"

"ये राणा साँगा हैं, अप्पा! राजपूत राजा। आपको तो पता होगा।"

"मुझे कैसे पता होगा? क्या ये हमारे कोई पड़ोसी हैं? या तुम्हारी जेस्सी आंटी के कोई दोस्त हैं?" अप्पा ने छेड़ा।

"जेस्सी टीचर, अप्पा, जेस्सी टीचर। उन्होंने सबसे कह रखा है कि स्कूल में सब उन्हें टीचर कहें, आंटी सिर्फ घर में। यहाँ तक कि एबी को भी उन्हें टीचर कहना पड़ता है। कल ही भूल से उसके मुँह से 'मम्मी' निकल गया तो हम सब हँस पड़े। आपको देखना चाहिए था, बेचारे के कान शर्म से लाल हो गए थे!" आदिल को एबी के लाल कान याद आए तो हँसी दबाते हुए बोला, "लेकिन अप्पा! क्या आपको सचमुच नहीं पता राणा साँगा कौन थे? मतलब, आप भी इतिहास में बहुत कमज़ोर हैं। फिर तो टेस्ट में मेरे इतने कम नम्बर आएँगे ही!"

"ओहो! तो मतलब ये मेरी गलती है। क्यों? मैं क्या करूँ बेटा मुझे कभी जेस्सी आंटी जैसी कोई टीचर मिली ही नहीं। और बेशक, मैं ही तो हूँ जो होमवर्क करने की बजाय अपनी कॉपी में ड्रॉइंग बनाता रहता हूँ।" अली मुसलियार ने शरारत भरी नज़रों से बेटे को देखा और लगभग गरम हो चुकी *कोझी* करी में करछी चलाई।

आदिल को समझ में नहीं आया इस पर क्या कहे और इसे जाने दिया। अली मुसलियार ने देखा कि उनका 12 वर्षीय बेटा किसी गहरी सोच में डूब गया है। उसकी इस सोच को अली मुसलियार अच्छी तरह जानते थे। वह पेंसिल से खेल रहा है, लेकिन उसका ध्यान कहीं और है। वह एकटक किसी ऐसी जगह देख रहा है जो उसे ही नज़र आ सकती है। जब वह पाँच साल का था, अमीना का इन्तकाल हो गया था, तब से आदिल उसका बेटा, दोस्त, साथी सब कुछ है। मुसलियार से बेहतर कोई नहीं जानता उसे क्या खाना पसन्द है, कौन-सी कहानियाँ सुनना पसन्द है, कौन-से रंग उसे अच्छे लगते हैं, और कौन-से खेल खेलना उसे अच्छा लगता है।

"अप्पा! अगले हफ्ते मैं स्कूल नहीं जाऊँ तो चलेगा?" आदिल ने झिझकते हुए कहा।

"क्या बेटा? मैं तो समझता था स्कूल तुम्हें अच्छा लगता है?" उसके इस बदले मूड और सवाल से हैरान अप्पा बोले।

"अच्छा तो लगता है लेकिन...पता नहीं। ये इतिहास..."

"अरे ठीक है! एक टेस्ट में कम नम्बर आए तो क्या हुआ? अगली बार ज़्यादा आ जाएँगे। अच्छी तैयारी करके जाना।"

"नहीं अप्पा! मुझे इतिहास अच्छा ही नहीं लगता। मुझे गणित और विज्ञान अच्छे लगते हैं। अब तो अँग्रेज़ी भी अच्छी लगने लगी है। लेकिन इतिहास? नहीं, बिलकुल नहीं।"

"चलो, खाना खाओ। लेकिन तुम तो कह रहे थे कि जेस्सी आंटी तुम्हारी प्रिय टीचर हैं और वो कक्षा में बहुत अच्छी तरह से कहानियाँ सुनाती हैं। तो इसका मतलब इतिहास विषय अब उतना कठिन नहीं रहा जितना पिछले साल था!"

"ये तो सही बात है। आंटी बहुत अच्छी हैं और खूब अच्छी कहानियाँ सुनाती हैं। सुनते-सुनते ऐसा लगता है जैसे हम भी वहीं पहुँच गए, सैकड़ों साल पहले...जहाँ सब कुछ हमारी आँखों के सामने हो रहा है। लेकिन फिर भी, पता नहीं अप्पा! वो भी क्या करेंगी? मैं इतिहास में कमज़ोर हूँ ना। कभी-कभी मुझे लगता है कि वो...नहीं, ये बात नहीं है, वो बहुत अच्छी हैं... लेकिन कक्षा में...।" आदिल बता नहीं पा रहा था उसकी परेशानी क्या है।

और फिर वह अचानक फूट पड़ा, "अप्पा! इतिहास मुझे पसन्द नहीं करता।"

अप्पा ने धीरे से उसका सिर सहलाया और बोले, "अय्यो! ये तो बेचारे इतिहास के खिलाफ बहुत बड़ी शिकायत है। लेकिन सुनो, खाना ठण्डा हो रहा है। ज़्यादा चिन्ता मत करो, सब ठीक हो जाएगा। तुम इतिहास भी वैसे ही सीख लोगे जैसे तुमने अँग्रेजी सीख ली – याद है अँग्रेज़ी तुम्हें कितनी कठिन लगती थी? अब ये बताओ, अगले हफ्ते का टेस्ट क्या है?"

"मुगलों का आगमन – बाबर! अप्पा, बाबर केरल क्यों नहीं आया? जेस्सी टीचर बता रही थीं कि उसे उत्तरी भारत पसन्द नहीं आया था। वहाँ गर्मी और धूल-धक्कड़ बहुत थी, और बाग-बगीचे नहीं थे।"

"सचमुच? हाँ तो ठीक बात है।" अली मुसलियार ने शरारत से आँख मारी। दोनों हँस पड़े। थोड़ी देर के लिए इतिहास और उसकी समस्याएँ आदिल के दिमाग से निकल गईं। "नहीं, तुम ठीक कह रहे हो, बाबर छंगनचेरी आता तो यहाँ उसे अच्छा लगता। इससे मुझे याद आया मेरे पास बाबरनामा की एक प्रति है, हालाँकि अँग्रेज़ी में है। पुरानी किताबों की अलमारी में कहीं पड़ी है। मैंने तो उसे कभी पढ़ा नहीं, लेकिन इतना जानता हूँ कि उसमें चित्र बड़े अच्छे हैं। अब तुम्हारा टेस्ट है तो हम-तुम साथ मिलकर उसे पढ़ सकते हैं – तुम्हें ज़रूर अच्छा लगेगा।"

"ठीक है।" आदिल ने मरे मन से कहा। उसे डर था कि यह भी कोई भारी-भरकम किताब होगी जिसमें तारीखें ही तारीखें भरी होंगी। तस्वीरें होने से क्या होता है? लेकिन अप्पा का बोलना जारी था, "मैं इतिहास के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं जानता, लेकिन पता है बाबर के बारे में सबसे मशहूर कहानी कौन-सी है? तुम्हारी जेस्सी आंटी – मुझे उन्हें टीचर तो नहीं कहना पड़ेगा ना? – क्या उन्होंने कभी तुम्हें बाबर की मौत की कहानी सुनाई?"

"नहीं! अभी हम लोग वहाँ तक नहीं पहुँचे हैं। क्या हुआ था? कैसे मरा वह?"

"उसका बेटा हुमायूँ बीमार पड़ गया। एक से एक काबिल चिकित्सक, अच्छी से अच्छी दवा, बड़े से बड़े साधु-सन्तों की दुआएँ – कुछ भी काम नहीं कर रहे थे। शहज़ादे की तबीयत बिगड़ती गई, ज़िन्दा रहने की कोई उम्मीद नहीं बची। फिर किसी औलिया ने बादशाह से कहा कि आप अल्लाह से कहिए कि बेटे की जान के बदले आप अपनी सबसे प्यारी चीज़ कुर्बान कर देंगे। बादशाह मान

गए। बेटे की ज़िन्दगी के लिए वह कुछ भी कर सकते थे। तो दरबार में हर शख्स सोचने लगा कि देखें, बादशाह क्या कुर्बानी देते हैं। क्या हिन्दुस्तान का तख्तोताज? या आगरा का बेशकीमती हीरा?"

"मुझे पक्का पता है उसने राजपाट ही कुर्बान किया होगा। एक अकेले हीरे के मुकाबले हिन्दुस्तान का राज ज़्यादा बड़ी चीज़ थी। है न अप्पा?" आदिल बोला।

"हम और तुम ऐसा सोच सकते हैं, लेकिन बाबर ने ऐसा नहीं सोचा। उसने अपनी ज़िन्दगी अल्लाह को सौंप दी, ये कहकर कि इससे ज़्यादा कीमती मेरे पास कुछ नहीं है।" आदिल की आँखें आश्चर्य से फटी रह गईं। "तो अल्लाह से इल्तिजा करते हुए कि हे अल्लाह! मेरे बेटे की जान के बदले मेरी जान ले ले, बाबर ने बेटे के पलंग के तीन चक्कर लगाए। कहते हैं इसके फौरन बाद बेटे की तबीयत सुधरने लगी, पिता बीमार पड़ गए और कुछ महीनों बाद ही अल्लाह को प्यारे गए।"

अली मुसलियार समझ गए कि आदिल पर उनकी कहानी का जादू चल गया है। आदिल खामोश हो गया था। लेकिन बात कुछ गहरी थी। हालाँकि अभी इसका पता नहीं चल रहा था।

"चलो ठीक है। आज के लिए काफी कहानी हो गई। अब झटपट खाना खत्म करो और होमवर्क करने बैठो।"

"ठीक है अप्पा। अगर इस बार भी टेस्ट में मेरे अच्छे नम्बर नहीं आए तो आप मुझे घर पर इतिहास पढ़ा दिया करना। आप अच्छी कहानी सुनाते हो।" आदिल ने चिकन करी का आखिरी टुकड़ा खत्म करते हुए बोला।

"ताकि तुम मेरे चित्र बनाते रह सको, क्यों? लाओ, तश्तरी इधर लाओ। तुम थोड़ी देर के लिए एबी के घर क्यों नहीं चले जाते? या थोड़ा घूमने चले जाओ! बाहर बहुत बढ़िया मौसम है। तुम्हारा लौटकर होमवर्क करने का दिल करने लगेगा।"

बाहर ठण्डक थी। हवा में बारिश की खुशबू आ रही थी। आदिल ने सोचा वह मस्जिद तक जाएगा और वहाँ से लौट आएगा। लगभग 20 मिनट बाद रोज़ की तरह आधे घण्टे के लिए बिजली चली जाएगी। इसके पहले-पहले उसे लौट आना चाहिए। पता नहीं क्यों, घर से निकलते समय उसने अपनी कॉपी और पेंसिल भी साथ ले ली थी। वह चलता जा रहा था और अपने इतिहास के पाठ के बारे में सोचता जा रहा था।

कल जेस्सी टीचर की क्लास में खूब मज़ा आया था। कल उन्होंने खनुआ के युद्ध की कहानी सुनाई थी। वह कक्षा में एक कोने से दूसरे कोने तक चलती जा रही थीं और हर छात्र के पास जा रही थीं। कभी उनकी आवाज़ ऊँची हो जाती, तो कभी धीमी। ऐसा लग रहा था मानो बाबर और राणा साँगा के बीच युद्ध अभी इस कमरे में ही हो रहा हो। जिस तरह वह कहानी सुना रही थीं, हर कोई चाह रहा था कि जीत राजपूत राजा की ही हो। पूरी कक्षा जोश में उफन रही थी।

लेकिन टीचर मुझे इस तरह क्यों देख रही थीं? वैसे कहानी सुनाते समय वह हर किसी को देखती थीं, लेकिन इस नज़र में कुछ खास बात थी। उनकी नज़र मेरे चेहरे पर आकर ठहर जाती, फिर हट जाती, कुछ देर बाद फिर आ जमती। जैसे-जैसे कहानी ज़्यादा दिलचस्प होती गई, उनकी नज़र मेरे चेहरे पर ज़्यादा ठहरने लगी। ऐसा लगता था टीचर कमरे में जहाँ भी होतीं उनकी नज़रें मुझे ही ढूँढ रही होतीं। आखिरकार उसने टीचर की तरफ देखना ही बन्द कर दिया। और जैसे यहीं कहानी भी खत्म हो गई। बाबर जीत गया। राणा की सेना के मुकाबले छोटी सेना होने के बावजूद। पर यह भी स्पष्ट था कि युद्ध का नायक कौन था। लेकिन आदिल को यह सब याद नहीं रहा – उसे याद रहीं सिर्फ टीचर की नज़रें। उसे इसका कोई कारण तो समझ में नहीं आया लेकिन कक्षा से, और यहाँ तक कि स्कूल से भी उसका जी उचट गया।

वह जानता था कि इतिहास और अँग्रेज़ी में बहुत फर्क है लेकिन अप्पा को कैसे समझाया जाए? बात कुछ अजीब-सी थी और किसी के सामने ऐसी समस्या नहीं आई होगी। उसके ज़्यादातर दोस्त सरकारी स्कूल में थे, जो पास भी था, लेकिन उनसे ज़्यादा मिलना नहीं होता था। वह इस स्कूल में इसलिए जाना चाहता था क्योंकि एबी उसका सबसे अच्छा दोस्त था। इसके अलावा उसे कभी कोई परेशानी हुई भी नहीं और वह निश्चित भी नहीं है कि यह कोई खास बात है। अप्पा ने एक पिता की अपने बेटे के लिए...नहीं, एक बादशाह की अपने बेटे के लिए...कुर्बान हो जाने की जो कहानी सुनाई थी, उससे उसे थोड़ा ठीक लग रहा था।

"अरे भाई...क्या तुम बता सकते हो मस्जिद यहाँ से कितनी दूर है? मुझे पानी पीना है, और हाथ-मुँह भी धोना है।" अचानक आदिल के बिलकुल नज़दीक से एक गहरी आवाज़ आई। आदिल बुरी तरह चौंक गया। उसने मुड़कर देखा। वह एक अजनबी था।

इसके पास एक घोड़ा भी होना चाहिए। आदिल ने सोचा। फिर उसने सोचा कि उसे ऐसा क्यों लगा? अजनबी अरेबियन नाइट्स सरीखी कहानी से निकला जीव या किसी पुरानी फिल्म के पात्र जैसा लग रहा था। उसने गहरे लाल रंग का एक लम्बा चोगा पहना था जिस पर कमरपट्टा बँधा था और ऊपर से एक सुन्दर कढ़ाई वाली बण्डी पहनी हुई थी। वह ज़्यादा लम्बे कद का तो नहीं था लेकिन मज़बूत कद-काठी वाला था। उसका रंग गोरा, नाक लम्बी, लटकती मूँछें और बारीक तराशी दाढ़ी थी। ऐसा आदमी आदिल ने पहले कभी नहीं देखा था। उसकी आँखें छोटी-छोटी थीं जैसी चीनियों की होती हैं, हालाँकि वह चीनी भी नहीं लग रहा था। अजनबी आदिल को दिलचस्पी से देख रहा था। आदिल को उसके सवाल का जवाब देने में कुछ समय लगा।
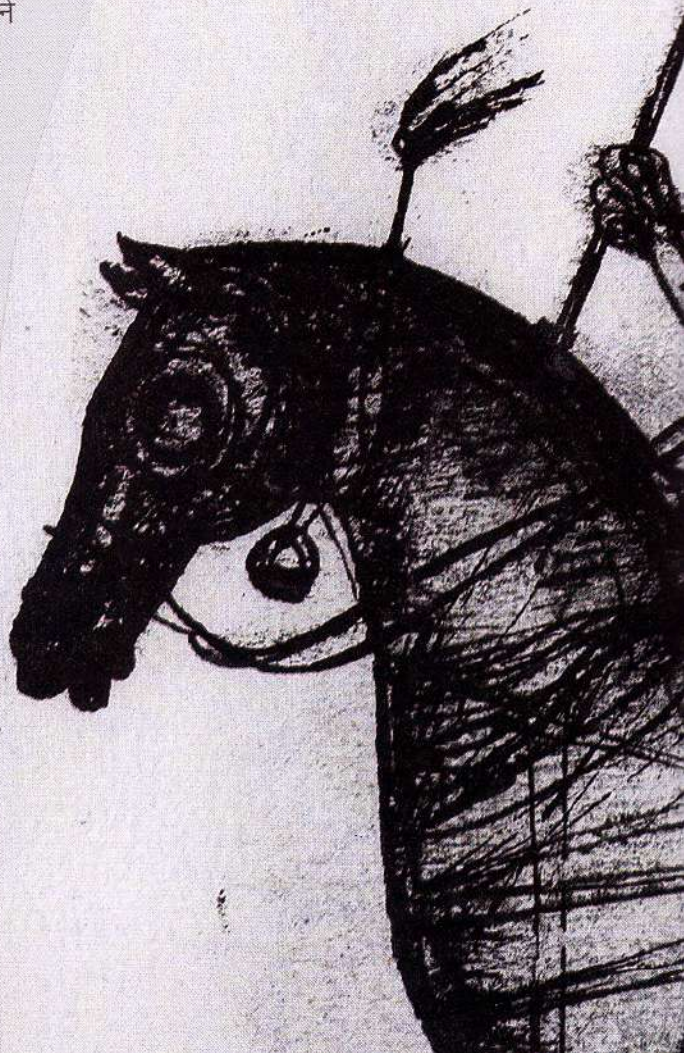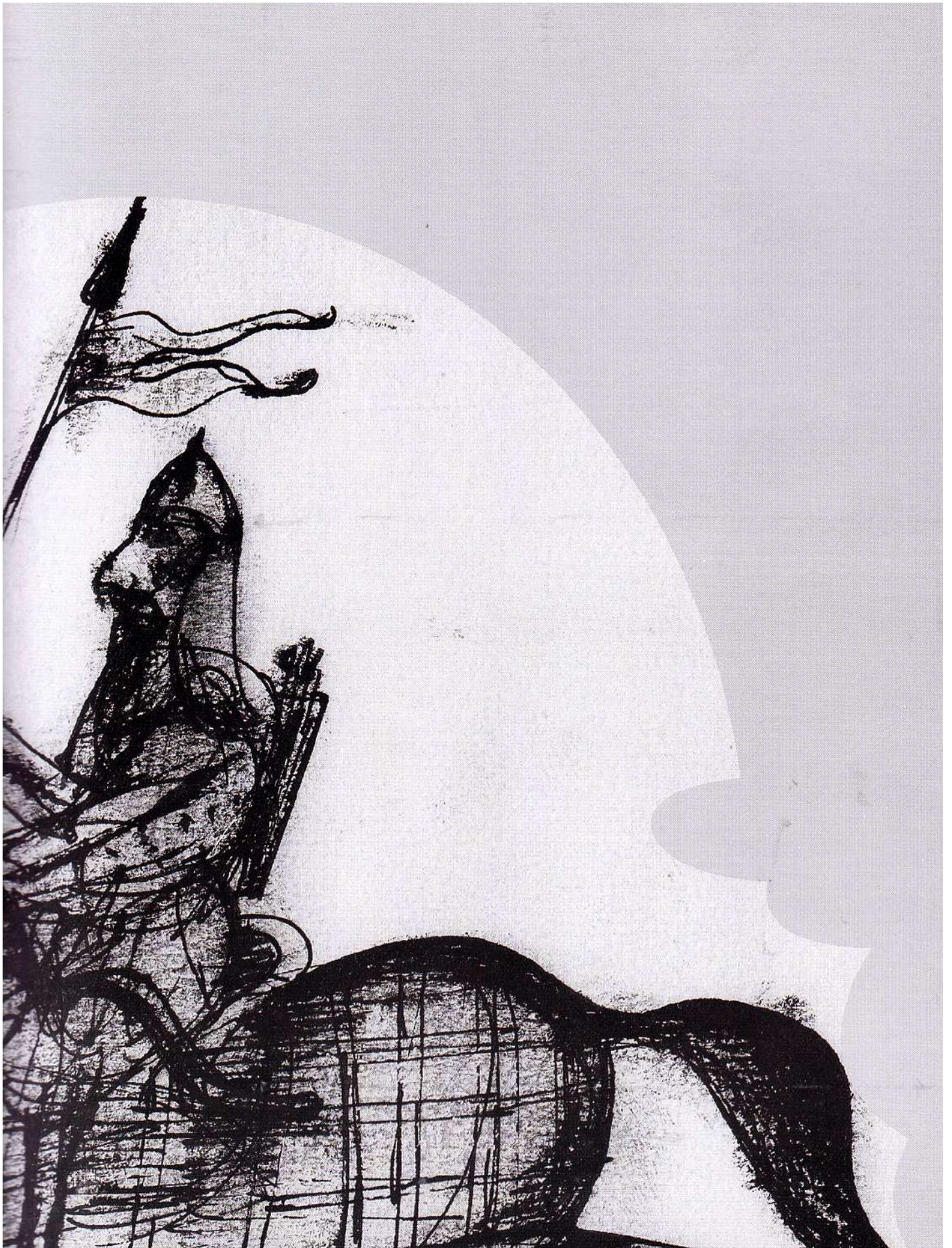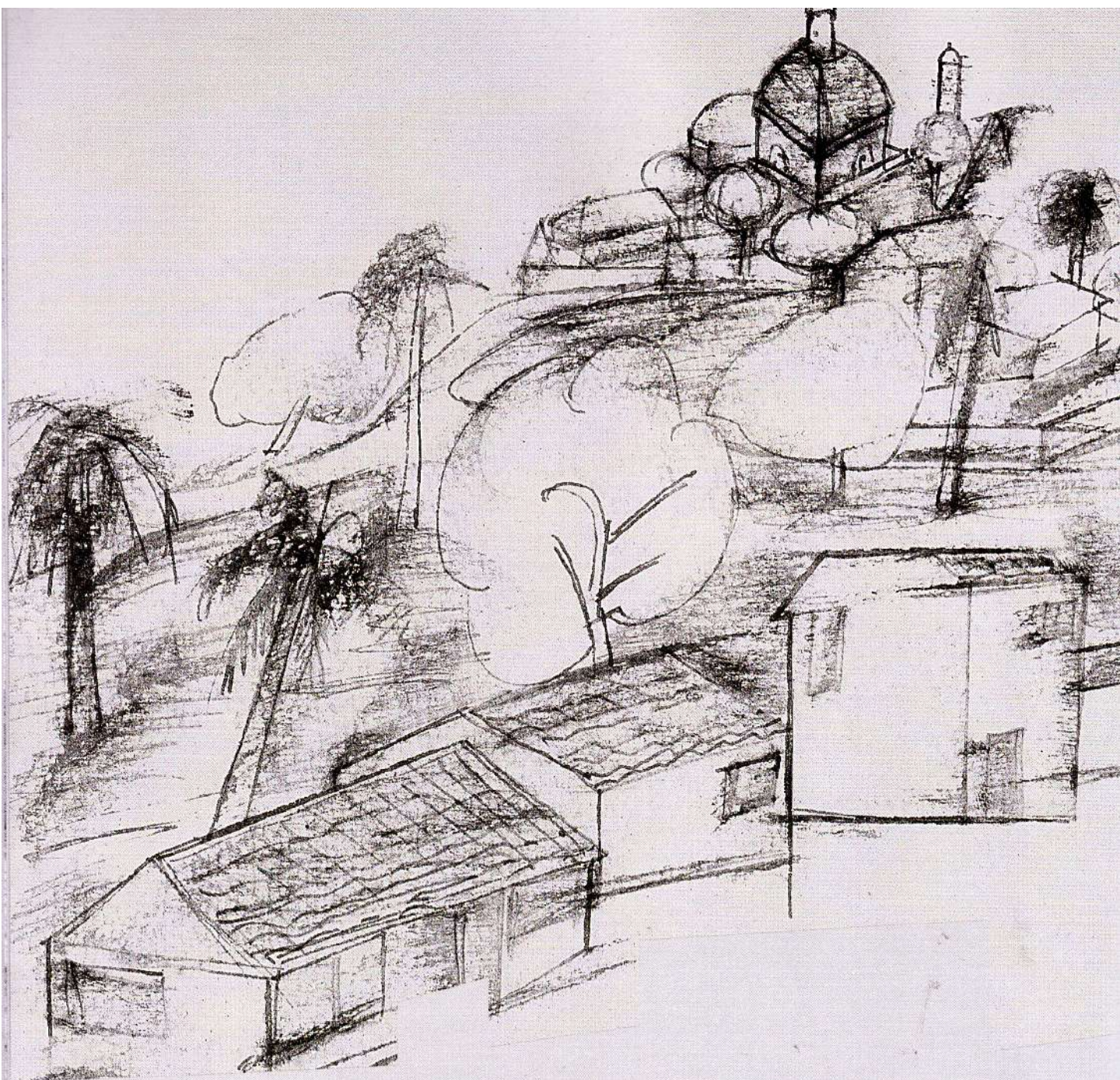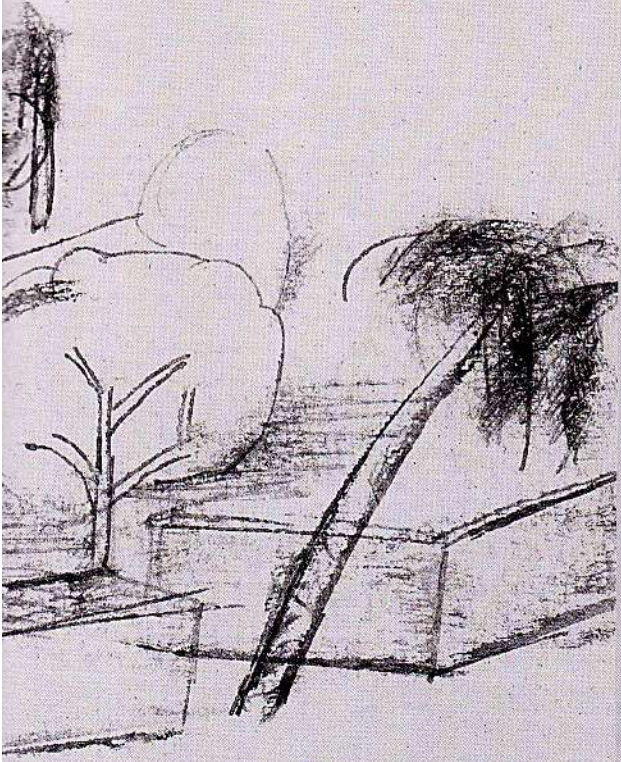
"नहीं, मस्जिद कोई खास दूर नहीं है। दरअसल मैं भी वहीं जा रहा हूँ... आपको दिखा दूँगा। लेकिन आप हैं कौन? यहाँ के तो नहीं लगते। क्या आप परदेसी हैं?"

"परदेसी? हाँ, परदेसी ही समझ लो। मैं बहुत दूर से आया हूँ। हिन्दुस्तान से। आगरा का नाम सुना है?" अजनबी बोला।

"सुना है। वही न जहाँ ताजमहल है?" आदिल बोला। "लेकिन हिन्दुस्तान से आया हूँ का क्या मतलब है? आप अभी भी हिन्दुस्तान में ही हो।"

"सचमुच?" अजनबी ने अचरज से कहा। "लेकिन यह दिल्ली या आगरा जैसा बिलकुल नहीं है। ये तो बहुत प्यारा है। पर काश! यहाँ इतनी बारिश नहीं होती। मैं जहाँ पैदा हुआ वह जगह तो स्वर्ग समान है! चारों तरफ पहाड़, बाग-बगीचे, फल-फूल और दुनिया के सबसे खुशनुमा मौसम! बस थोड़ी ठण्ड होती है पर सुन्दर है।" उसने झुककर आदिल के परेशान चेहरे को देखा और खामोश हो गया। "खैर, इसके बारे में मैं तुम्हें बाद में बताऊँगा। देखो, उस पानी के चहबच्चे को...। तुम मुझे ये बताओ कि तुम क्या सोच रहे थे? मैं बड़ी देर से तुम्हें देख रहा था और सोच रहा था कि कब तुम्हारा ध्यान मुझ पर जाए! मैंने सोचा तुम किसी खयाल में खोए हुए हो!"

"ओह! पता नहीं! कोई खास बात नहीं थी, बस ज़रा इतिहास के टेस्ट..."

"नहीं, नहीं, बताओ। इतिहास तो मुझे भी बहुत अच्छा लगता है। वह बहुत दिलचस्प होता है, और महत्वपूर्ण भी। तुम्हें नहीं लगता?"
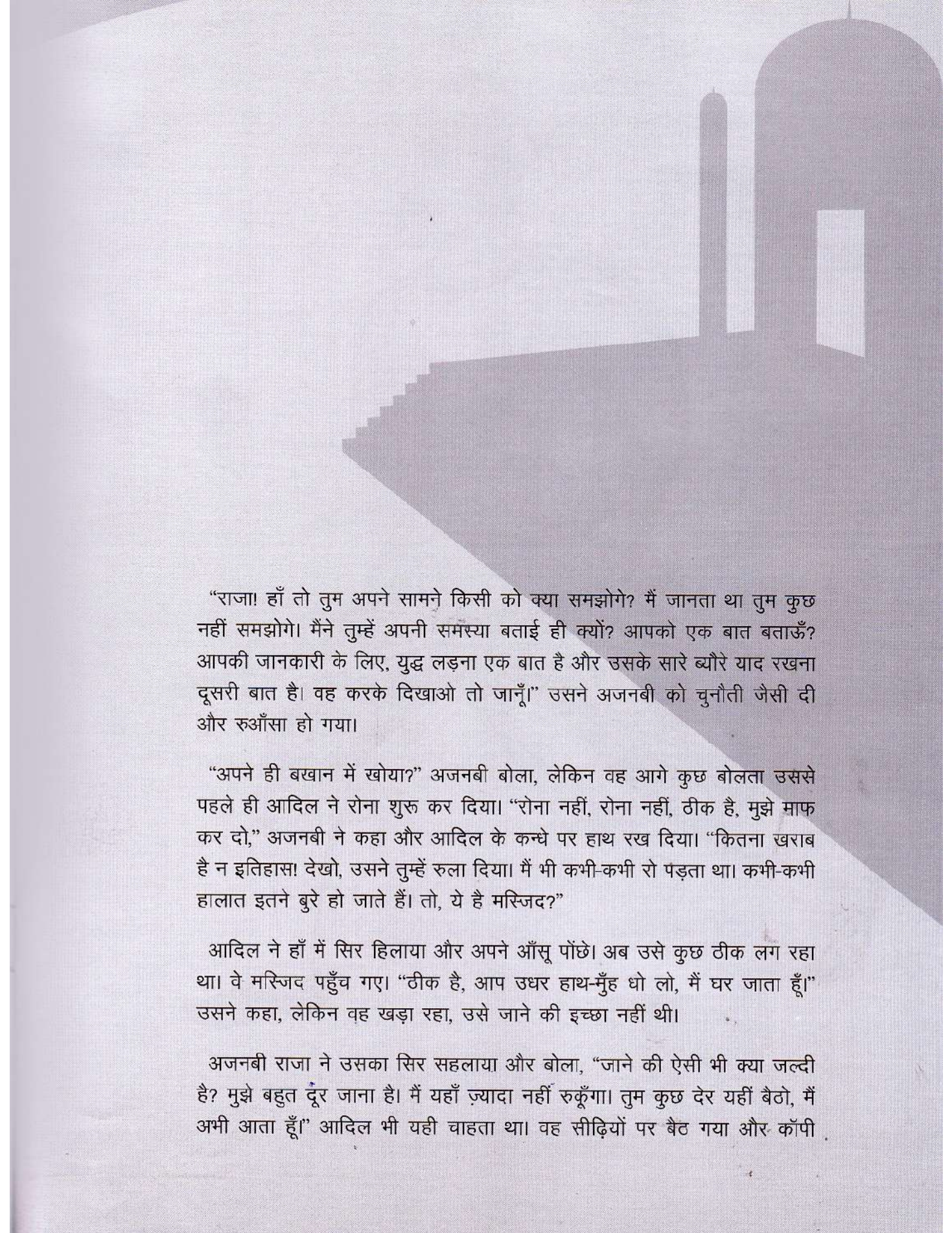
"हाँ, वो तो है, लेकिन..." और फिर पता नहीं क्यों आदिल ने अपनी सारी परेशानी इस आदमी के सामने रख दी जिससे वह अभी-अभी मिला था।

"मैं जानता हूँ यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। हो सकता है समस्या ही न हो..." बोलते-बोलते आदिल चुप हो गया।
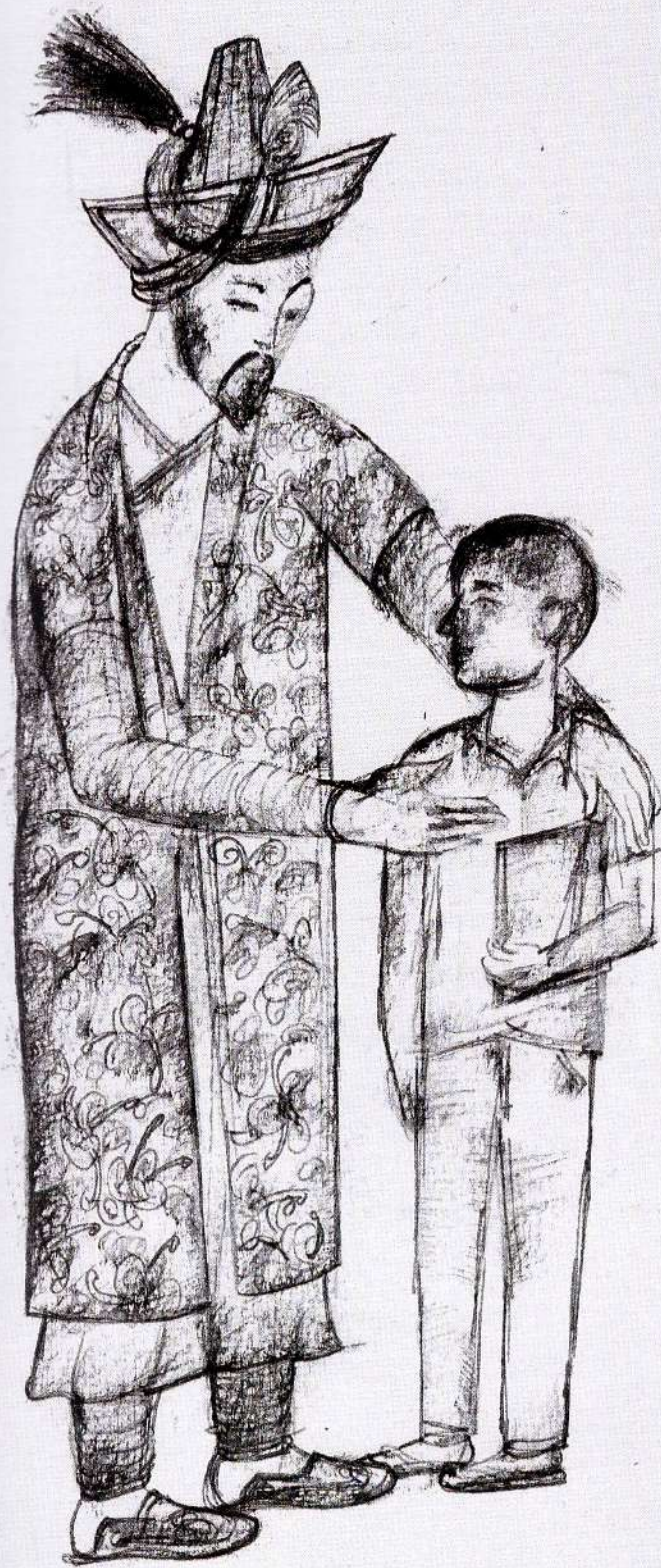
"बेशक यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। मैं 11 साल का था जब मेरे पिताजी गुज़र गए और मैं राजा बन गया। और फिर युद्ध शुरू हो गए। ये सब मैंने लिख रखा है, वरना क्या होता है, कि लोग भूल जाते हैं। सारी लड़ाइयाँ और खून-खराबा मेरे हक को हासिल करने के लिए थीं – खूबसूरत समरकन्द, मेरा शहर, महान तैमूर का शहर। अब ये थीं परेशानियाँ!"

आदिल की आँखें भर आईं, लेकिन वह इस अजीब-सी सजधज वाले आदमी से थोड़ा चिढ़ भी रहा था जो अपनी समस्याओं के बारे में ही बोले जा रहा था।

"राजा! हाँ तो तुम अपने सामने किसी को क्या समझोगे? मैं जानता था तुम कुछ नहीं समझोगे। मैंने तुम्हें अपनी समस्या बताई ही क्यों? आपको एक बात बताऊँ? आपकी जानकारी के लिए, युद्ध लड़ना एक बात है और उसके सारे ब्यौरे याद रखना दूसरी बात है। वह करके दिखाओ तो जानूँ।" उसने अजनबी को चुनौती जैसी दी और रुआँसा हो गया।

"अपने ही बखान में खोया?" अजनबी बोला, लेकिन वह आगे कुछ बोलता उससे पहले ही आदिल ने रोना शुरू कर दिया। "रोना नहीं, रोना नहीं, ठीक है, मुझे माफ कर दो," अजनबी ने कहा और आदिल के कन्धे पर हाथ रख दिया। "कितना खराब है न इतिहास! देखो, उसने तुम्हें रुला दिया। मैं भी कभी-कभी रो पड़ता था। कभी-कभी हालात इतने बुरे हो जाते हैं। तो, ये है मस्जिद?"

आदिल ने हाँ में सिर हिलाया और अपने आँसू पोंछे। अब उसे कुछ ठीक लग रहा था। वे मस्जिद पहुँच गए। "ठीक है, आप उधर हाथ-मुँह धो लो, मैं घर जाता हूँ।" उसने कहा, लेकिन वह खड़ा रहा, उसे जाने की इच्छा नहीं थी।

अजनबी राजा ने उसका सिर सहलाया और बोला, "जाने की ऐसी भी क्या जल्दी है? मुझे बहुत दूर जाना है। मैं यहाँ ज़्यादा नहीं रुकूँगा। तुम कुछ देर यहीं बैठो, मैं अभी आता हूँ।" आदिल भी यही चाहता था। वह सीढ़ियों पर बैठ गया और कॉपी

खोलकर राणा का चित्र देखने लगा जो उसने घर पर बनाया था।

अचानक पीछे से अजनबी आया और आदिल का चित्र देखकर बोला, “अरे! ये तो मेवाड़ के राणा संग्राम सिंह हैं।”

“आप जानते हैं?” आदिल खुश हो गया। किसी ने तो उसका बनाया चित्र पहचान लिया। “आप इतिहास में पक्के होंगे। अप्पा तो इसे पहचान ही नहीं पाए थे।”

“अच्छा बनाया है। मेरा खयाल है यह देखकर वह खुश होते।” अजनबी ने कहा। फिर जैसे मन ही मन बुदबुदाया, “इतने अरसे बाद किस तरह से पुराने दोस्त से मुलाकात हुई।” अजनबी मुस्कराया जैसे किसी पुरानी खुफिया बात पर हँस रहा हो।

“पुराने दोस्त?” आदिल ने खुद में सोचा। बेचारा, शायद इसे भी इतिहास से बहुत परेशानी हुई होगी। और तभी उसे एक उपाय सूझा।

बोला, “आपका चित्र बनाऊँ? ज़्यादा वक्त नहीं लगेगा।”

“ज़रूर बनाओ! पर उसके बदले में मैं तुम्हें कुछ दे नहीं पाऊँगा!”
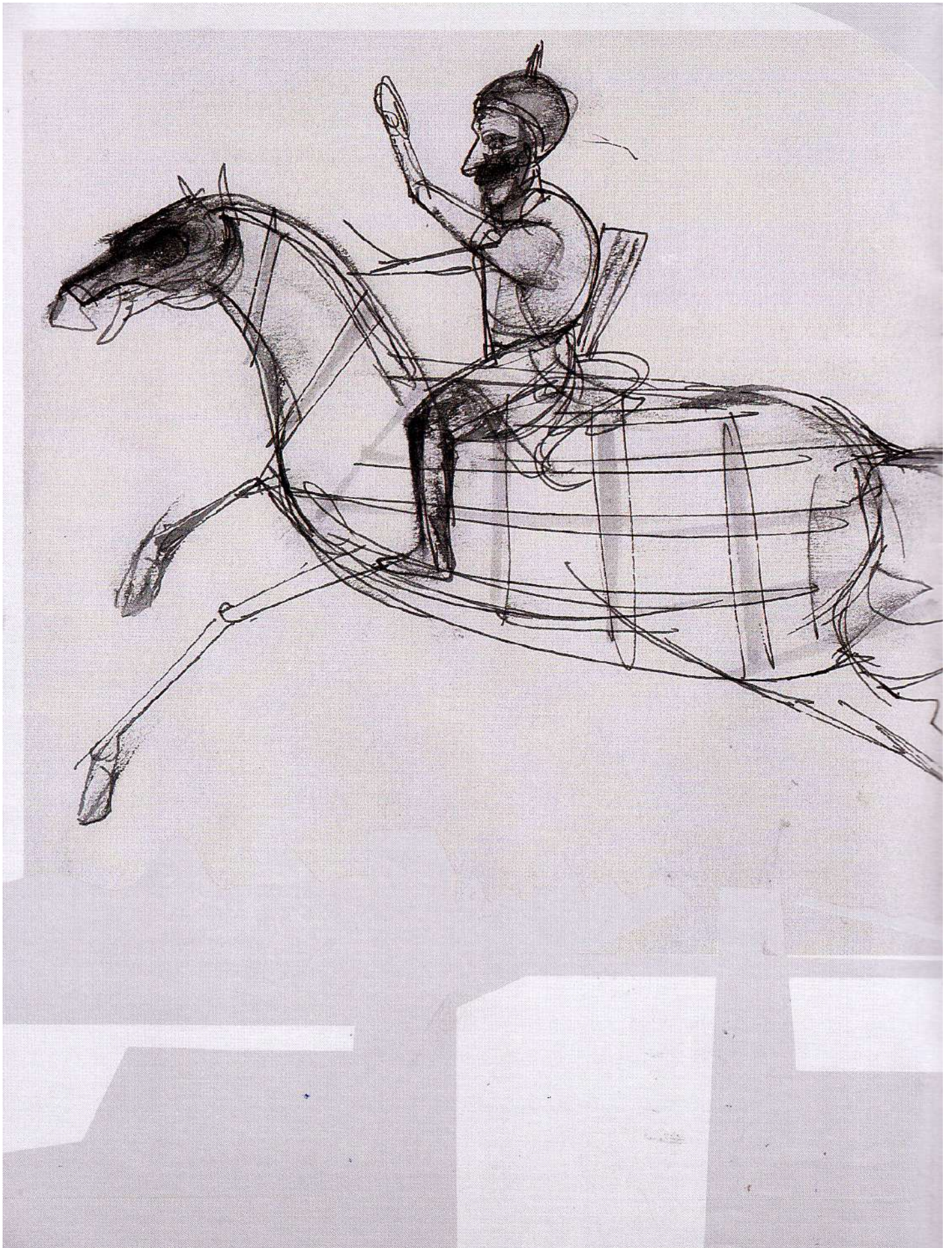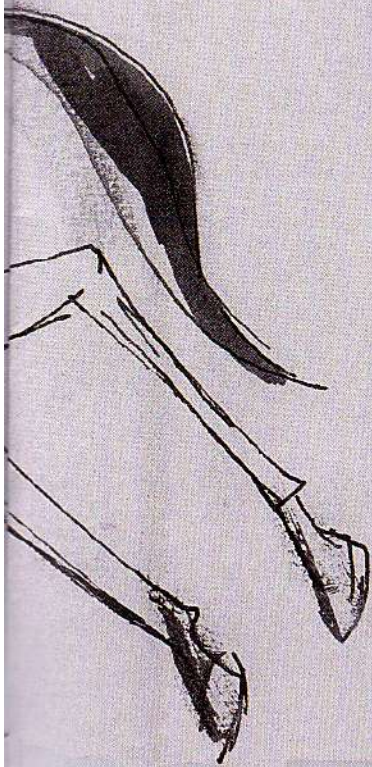
"अरे, उसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मैं सिर्फ अपने दोस्तों को दिखाऊँगा। और अप्पा को भी।" और इससे पहले कि अजनबी का मन बदले, आदिल ने चित्र बनाना शुरू कर दिया।

"तो हम तुम्हारे इतिहास के टेस्ट की बात कर रहे थे। क्या होता है टेस्ट? ज़्यादा फिक्र मत करो। सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह सब सम्हाल लेगा। तुम बस अपनी तरफ से अच्छा करो और उस पर भरोसा रखो। भरोसा बहुत बड़ी चीज़ है। अभी शायद तुम न समझ पाओ, पर धीरे-धीरे समझ जाओगे।"

"मैं जानता हूँ। अप्पा भी कभी-कभी यही बात कहते हैं, लेकिन" आदिल बोला। अचानक उसने हाथ रोककर राजा को देखा। राजा मुस्करा रहा था। आदिल फिर चित्र बनाने लगा।

"लेकिन यह सब इतिहास में है। अब खानुआ के युद्ध को ही लो। बीस हज़ार की छोटी-सी सेना दो लाख की विशाल सेना को हरा देगी। कोई सोच सकता था?"

आदिल के दिमाग में एक सवाल था जो वह शाम से ही पूछना चाह रहा था। पर वह ये नहीं तय कर पा रहा था कि किससे पूछे? उसे लगा उसका सवाल ऐसा ही कोई बेकार का सवाल है, लेकिन अब उसे लगा कि यह सवाल राजा से पूछा जा सकता है।

"क्या आपको लगता है कि बाबर राणा साँगा से ज़्यादा वीर था?" उसने धीमे सुर में पूछा, मानो इसका जवाब उसे पहले ही पता हो।

"ज़्यादा वीर? पता नहीं। दोनों वीर थे।" राजा हँसा। "लेकिन इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। युद्ध के दिन कुछ भी हो सकता है। कौन ज़्यादा वीर था, या अक्लमन्द था, यह सब बाद में आता है। राणा साँगा ऐसे ही महान

नहीं कहलाता था। और बाबर भी कोई पहला युद्ध नहीं लड़ रहा था। युद्ध कठिन था और लम्बा था। और सब लोग यह बात जानते थे।"

"ज़रा सोचो, एक तरफ एक अजनबी मुल्क में, घर से कोसों दूर लड़ती हुई बाबर की थकी हुई सेना और दूसरी तरफ हिन्दुस्तान के श्रेष्ठ सेनापति के नेतृत्व में युद्ध करती होशियार और ताज़ादम, काबिल सैनिकों की दस गुना बड़ी सेना! बेशक बाबर के सैनिक बहादुर थे, उन्होंने बहुत युद्ध लड़े थे, लेकिन वे बहुत थके हुए थे और घर से दूर थे। रणनीति, अनुभव, बहादुरी, हिम्मत युद्ध में इन सबकी ज़रूरत पड़ती है। लेकिन कौन कह सकता है कि क्या होगा? या अन्त किस तरह होगा। कोई नहीं जानता। सिर्फ अल्लाह जानता है। तुम जो कर सकते हो करते हो, लेकिन आखिर में सब अल्लाह पर छोड़ देना पड़ता है। और इसमें कोई शर्म की बात नहीं है। समझ रहे हो न?" राजा ने कहा और आहिस्ता से भावविभोर आदिल के बालों पर हाथ फेरा।

"हमें इस बात की फिक्र नहीं करनी चाहिए कि कौन ज़्यादा बहादुर, या हिम्मती था, या दूसरे से बेहतर था। सबसे अच्छे युद्ध वे थे जिनमें इस बात का फैसला किया ही नहीं जा सकता था। देखा जाए तो यह सवाल ही गलत है। एक पक्ष जीतता है, दूसरा हारता है, और उसके बाद बहुत सारी बातें होती हैं। सदियाँ गुज़र जाती हैं, इतिहास बन जाता है, और हम यही सोचते रह जाते हैं कि दोनों में कौन ज़्यादा वीर था! हमें पूछना चाहिए कि इससे क्या फर्क पड़ता है?" राजा ने बहुत ज़ोर देकर कहा, आदिल राजा से थोड़ा सिकुड़कर बैठ गया।

आदिल को अच्छा लग रहा था। उसे लग रहा था जैसे उसके कन्धे से कोई बोझ उतर गया हो। "तुम सही कहते हो। सचमुच हमें इसकी परवाह क्यों करनी चाहिए?" उसने अजनबी से उसी अन्दाज़ में पूछा जैसा कि वो अपने अप्पा से पूछता। यह आदमी कितना जानकार है। उसके अप्पा की ही तरह।

"लेकिन मैं तुम्हारे हर सवाल का जवाब नहीं दे सकता। देर हो रही है। मुझे जाना है। तुम्हारा चित्र तो पूरा हो गया ना?" आदिल की कॉपी में झाँकते हुए अजनबी राजा ने पूछा। चित्र पूरा हो गया था। अच्छा चित्र था।

"हम्म...लगता है आँखें ज़रा ज़्यादा ही छोटी बन गईं...और मेरी दाढ़ी थोड़ी ज़्यादा लम्बी हो गई।" चित्र को ध्यान से देखते हुए राजा ने कहा और फिर आदिल को देखते हुए तुरन्त जोड़ा, "लेकिन अच्छा है। मुझे अच्छा लगा। क्या इसके नीचे मैं अपना नाम लिख दूँ?" थोड़ा सकुचाते हुए राजा ने पूछा।

"हाँ! उससे चित्र पूरा हो जाएगा। वैसे आपने अभी तक अपना नाम नहीं बताया?"

राजा ने आदिल से पेंसिल ली और चित्र के नीचे अपना नाम लिख दिया। उससे पेंसिल पकड़ी नहीं जा रही थी, ठीक से लिखा नहीं जा रहा था, फिर भी उसने लिखकर कॉपी बन्द की, और आदिल को पकड़ा दी।

"ये क्या चीज़ है जिससे तुम लोग लिखते हो? ठीक से पकड़ में ही नहीं आती। खैर, अब मैं चलता हूँ। टेस्ट अच्छा करना। अल्लाह ने चाहा तो फिर मिलेंगे।"

अचानक अँधेरा हो गया। आदिल समझ गया बत्ती जाने का समय हो गया है और उसे देर हो चुकी है। आसमान में चाँद चमक रहा था, हालाँकि कुछ बादल भी थे। उसे जल्दी घर पहुँचना होगा। राजा गायब हो चुका था। कुछ देर के लिए घुप्प अँधेरा हो गया था। उसी में राजा गायब हो गया होगा। आदिल ने चाँदनी में आकर अपनी कॉपी खोली। चित्र के नीचे अजीब-सी लिखावट में कुछ लिखा था। न वह अरबी जैसा

चित्र: कात्यायिनी दाश

लगा रहा था न हिन्दी जैसा और न मलयालम जैसा। और अँग्रेज़ी तो नहीं ही था। फिर था क्या? घर जाकर लाइट में देखेंगे ताकि ठीक से पढ़ पाएँ। कहीं अप्पा चिन्ता न कर रहे हों! शायद सोच रहे हों मैं एबी के घर चला गया हूँ!

आदिल के दिमाग में अब भी राजा की शक्ल और उसके द्वारा कही गई बातें घूम रही थीं। आदिल जब घर पहुँचा तो लाइट आ चुकी थी और अप्पा आरामकुर्सी में बैठे किसी पुरानी किताब के पन्ने पलट रहे थे।

"आह! आ गए? मैं तो जेस्सी को फोन करने वाला था। अच्छा लग रहा है?"

"हाँ! और मुझे आपको कुछ दिखाना है। आप विश्वास नहीं करेंगे। मैं आज एक राजा से मिला।"

आदिल ने पूरी घटना अप्पा को सुनाई और फिर अपना बनाया राजा का चित्र भी दिखाया। लेकिन चित्र के नीचे की लिखावट को न आदिल समझ पाया न अप्पा!

"आप इसे पढ़ सकते हैं? क्या लिखा है?" आदिल ने पूछा।

अचानक अप्पा बोले, "एक मिनट! ज़रा वो किताब लाना जो मैं अभी देख रहा था।" किताब थी बाबरनामा। पहले पेज को खोला तो वहाँ एक चित्र था। "देखो! इसे देखो! इसे पहचानते हो?"

आदिल ने देखा। रंग-बिरंगा चित्र। शहंशाह बाबर! उसने किताब के चित्र को देखा और फिर अपने बनाए चित्र को। हूबहू वही लाल चोगा, छोटी-छोटी आँखें, तराशी हुई दाढ़ी...

“ये लिखावट कुछ-कुछ अरबी जैसी लग रही है, पर अरबी है नहीं।” अप्पा ने आदिल से उसकी कॉपी लेते हुए कहा। हो सकता है पुरानी तुर्क हो।” बाप-बेटे ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

आदिल उस रात खुशी के मारे सो नहीं सका। वह चित्र को देखता रहा और शाम की घटनाओं के बारे में सोचता रहा। उसने तय किया कि वह इस बारे में अपने दोस्तों को कुछ नहीं बताएगा। यह उसका खुद का रहस्य है। वह इतिहास के लिए दूसरी कॉपी ले आएगा और इस कॉपी को घर पर ही रखेगा। उसने सोचा अब उसे सो जाना चाहिए, सुबह स्कूल भी जाना है। लेकिन कोशिश करने पर भी नींद नहीं आई। फिर उसे राजा की कही एक और बात याद आई। उसने सोचा उसे यह बात लिख लेनी चाहिए। वह मेज के पास गया जहाँ खिड़की से बाहर सड़क की रोशनी आ रही थी। उसने कॉपी का नया पेज खोला, पेंसिल उठाई, उसके एक सिरे को दाँतों बीच दबाया। कुछ पल सोचा और पेज पर ऊपर ही ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा

बादशाह, मेरा दोस्त!

प्यारी आत्माएँ

रेखराज

चित्र
के पी रेजी

अँग्रेज़ी से अनुवाद
स्वयं प्रकाश

शृंखला सम्पादक
सुशील शुक्ल

एकलव्य
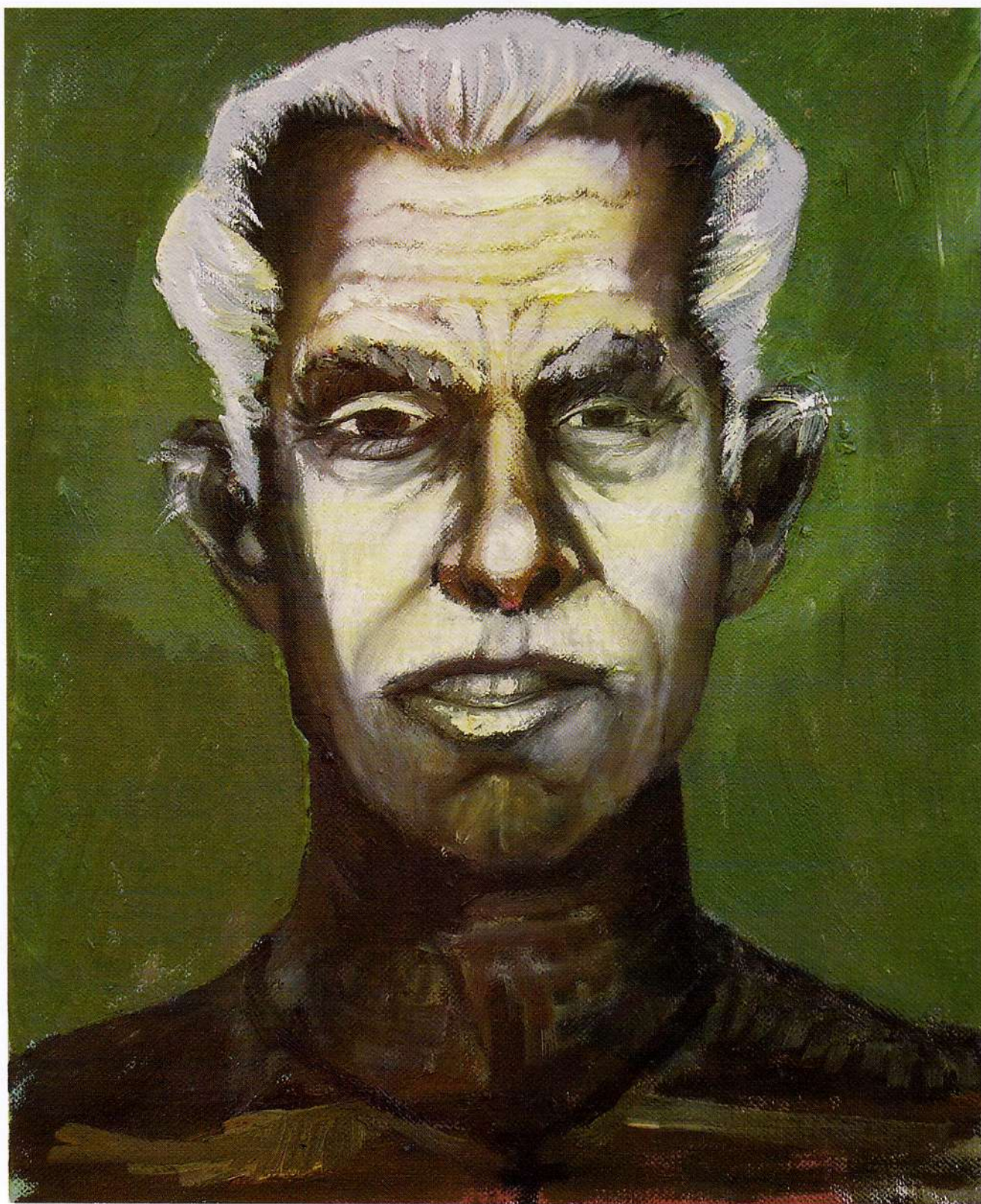
आज गुरुवार था। मथाई अपच्चन को मालूम था कि गुरुवार बाज़ार का दिन होता है। आज, सब मज़दूरनियों को खेत पर भेजकर वह बाज़ार जाएगा। इस बार उसे करेले और फलियों के बीज बाज़ार से खरीदने पड़ेंगे। पिछले साल के सब्ज़ियों के बीज उसने सहेजकर, धूप दिखाकर और राख में लपेटकर रखे थे, लेकिन चूहे सब चट कर गए। उसने सोचा, "अन्ना को अब बच्चे खेत में तो काम करने नहीं देते, नहीं तो वह इन चीज़ों को अच्छी तरह सम्हाल सकती थी। चिन्गम के महीने में मैं 75 साल का हो जाऊँगा। अन्ना भी इतने की ही होगी! ज़िन्दगी के भी खेल निराले हैं। कभी अन्ना को इतना काम करना पड़ता था कि शाम 7 बजे से पहले खेत से घर नहीं लौट पाती थी। खैर, मुझे खुशी है कि हमने अपने बच्चों को पढ़ाने-लिखाने का फैसला किया। अब वो काम-धन्धे से लगे हुए हैं और इसीलिए हमारा रोटी-कपड़ा ठीक से चल रहा है।" चलते-चलते मथाई अपच्चन यही सब सोच रहा था।

वो सोचने लगा कि पता नहीं मज़दूर खेत में पहुँचे भी हैं कि नहीं। वो सारे के सारे अन्ना के दोस्त और उनके बच्चे थे। अपनी ज़मीन के बारे में सोचते हुए मथाई के पेट में अजीब-सी हूक उठी। ऐसी बेचैनी उसे पहले कभी न हुई थी। सारी ज़िन्दगी उसने बड़े ज़मींदारों के 50-50 एकड़ बड़े खेतों की देखरेख करते बिताई थी। वो उसका काम था। ज़मींदारों, उनके बच्चों और उनकी ज़मीनों का खयाल रखना।

उसने मेहनत बहुत की पर इससे कुछ बचा न सका। "ऐसी सेवा का फायदा ही क्या। दिन-रात खटो पर कहने को अपना कुछ नहीं। बचे-खुचे अनाज पर ज़िन्दगी बिताओ।" अन्ना कहती। उनकी सबसे छुटकी बेटी इसे सुन अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराती। खेतों में कटाई के बाद बचा या खलियान के आसपास बिखरा अनाज – खेतों के रखवाले के पल्ले बस यही आता था। वो और उसका परिवार कटाई के बाद इसे बटोरता। धूल-मिट्टी में सने दाने ही उनकी किस्मत में आते।

पर चाहे कुछ भी बोलो, मथाई जानता था कि यह न होता तो उसे और उसकी पत्नी को उम्र भर किसी मापिला ज़मींदार के यहाँ बँधुआ बनकर रहना पड़ता। और फिर, खेत-फसल की रखवाली के साथ इज़्ज़तदारी भी जुड़ी है। इसी के चलते तो वे अपने बच्चों को पढ़ा-लिखा पाए। उसे जो इज़्ज़त हासिल थी उसी की बदौलत तो वो अयंकली फोरम शुरू कर पाया। उसी फोरम में आने वाले एक पढ़े-लिखे आदमी ने उसे अपने बच्चों को स्कूल भेजने को कहा था। "इसी से तो हमारा बेटा आज हमें रहने-खाने के पैसे भेज पाता है। साथ में कुछ हाथ-खर्च अलग से देता है। मेरी थोड़ी-बहुत ताड़ी और अन्ना की पूजा-आरती की किताबों का खर्च इसी से निकलता है। सोचो वो आज मलमल के कपड़े पहनती है।" खेत के करीब आते ही मथाई की सोच का सिलसिला थम गया।
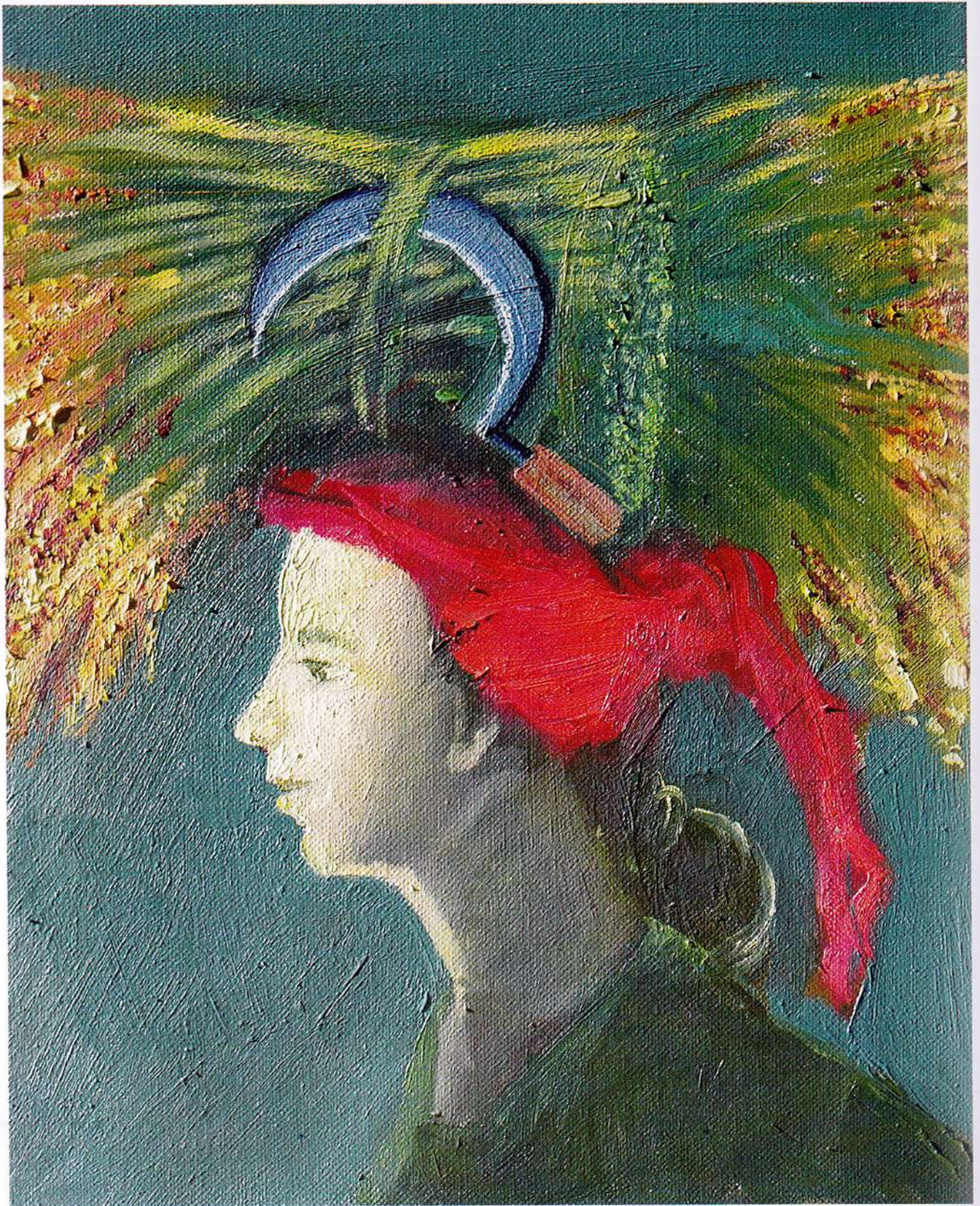
पिछले हफ्ते उसके खेत में हल चला था। कोई मज़दूर मिल नहीं रहा था इसलिए वह खुद ही भिड़ गया। एक दोस्त भी साथ हो लिया। उन्होंने घुटने-घुटने पानी में चार दिन जुताई की। वाह! क्या काम हुआ! खेत से कुछ दूर रसोई में चावल निथारती अन्ना के कानों में उनकी आवाज़ पड़ रही थी: हे च्च च्च च्च च्च! और भैंसे का दम लगाकर आगे बढ़ना।

आज खेत को तैयार करना पड़ेगा। औरतें उस पर पाटा फेरेंगी, खरपतवार निकालेंगी और बीज डालने के लिए खेत तैयार करेंगी। नौकरी लगने के दो-तीन साल बाद मथाई अपच्चन के बेटे ने ये ज़मीन खरीदकर उसे दी थी। अपनी ज़मीन पर अपनी मनमर्ज़ी की फसल उगाना मथाई अपच्चन का पुराना सपना था। ज़मीन खरीदना आसान नहीं था। ज़मीन का मोल तो उसे ही चुकाना था फिर भी उसे ज़मींदारों की चिरौरी करनी पड़ी कि वे उसे यह डेढ़ एकड़ का टुकड़ा खरीद लेने दें।

जिस दिन उसे ज़मीन का पट्टा मिला, मथाई अपच्चन रात भर रोता रहा। अपने पुरखों को याद करता रहा। "हे माई-बाप लोग! ये आपका ही आशीर्वाद है कि जिस ज़मीन पर मैंने अपना पसीना बरसों गिराया, आज मैं उसका मालिक हूँ। हर साल आपको भोग चढ़ाऊँगा, कसम खाता हूँ।"

कल खेत से पानी निकाल लिया था। दिया बत्ती का समय था। दक्षिण दिशा में स्थित कब्रगाह की तरफ से मथाई अपच्चन् लौट रहा था कि रास्ते में वेलुम्बन मिल गया। उसने बताया कि कृषि समिति ने बाँध के दरवाज़े खोलने का फैसला किया है ताकि चार-पाँच दिन में खेतों में फिर पानी आ सके। मथाई अपच्चन तुरन्त समझ गया कि उसे इससे पहले-पहले रोपे तैयार रखने पड़ेंगे। वह तुरन्त हमेशा वाले मज़दूरों से मिला, उनकी मज़दूरी तय की और दूसरे ज़रूरी इन्तज़ाम करने लगा।

लेकिन सबसे पहले पिछले साल के बचे बीजों को बोरों में भरकर अंकुरित करना पड़ेगा। कई तरह के पूजा-पाठ, अनुष्ठान करने पड़ेंगे। पुरखों को मुर्गा चढ़ाना पड़ेगा, आधी बोरी बीज चर्च में देना पड़ेगा और कुलदेवी के लिए भी बलि और ताड़ी चढ़ानी पड़ेगी। यह सब होने के बाद ही बुआई शुरू हो सकती है। रात को बीज भिगोते समय वह काँप रहा था। सारे बदन में बिजली जैसी दौड़ रही थी।

एक झटके में जैसे उसके माँ-बाप और छोटे काका उसकी आँखों के सामने आ खड़े हुए। खेत के उस पार रहने वाली छोटी काकी भी। उनका हाथ किसने पकड़ रखा था? राहेल ने या पोनम्मा ने? कुछ समझ में नहीं आया। कैसे समझ में आता! वो दोनों तो डूब गए थे जब वे 10 और 12 साल के थे। मथाई अपच्चन तो उस समय सिर्फ तीन साल का था। उनके हरे और नीले घाघरे आज भी मथाई अपच्चन की आँखों में घूम रहे हैं।

उनकी ज़मीन वाकई बहुत भाग्यशाली थी। तीन दिन के भीतर ही बीज अंकुरित हो गए। उस रात पुरखों की आत्माएँ उनके सिरहाने फुसफुसाती रहीं। अन्ना ने नींद में किसी को कोसा। मथाई और सुकू ने औरतों द्वारा तैयार किए गए खेत में दोनों हाथों से अंकुरित बीज छींट दिए। उसने तय कर लिया था कि औरों से पहले आज यह काम पूरा कर लेगा।

लेकिन आसपास के ज़मींदार उससे नाराज़ थे। अपने खेत में व्यस्त होने के कारण उसने उनके खेतों की रखवाली करना छोड़ दिया था। उन्होंने औरतों को धमकी दी थी, "उस पुलाया के खेत को किसी ने हाथ भी लगाया तो उसे हमारे यहाँ काम नहीं मिलेगा।" ऐसी धमकी के बाद कौन औरत उसके खेत में काम करने आती? और वो भी तब जब खेत इतना छोटा-सा हो। लेकिन मथाई ने हार नहीं मानी। "जो होगा देखा जाएगा!" उसने सोचा।

खेत में पड़े अंकुरों को खा जाने के चक्कर में कबूतर खेत के ऊपर चक्कर लगा रहे थे। मथाई और उसका पोता दिन भर वहीं बैठे कबूतरों को उड़ाया करते थे। जब वे नीचे आते ये नारियल के सूखे पत्तों से ज़मीन को फटकारते... ठप्प...ठप्प...और पंछी उड़ जाते।

अंकुर अब बड़े हो गए थे और उन्हें दूसरी जगह पर रोपा जा सकता था तब अन्ना बुखार से कमज़ोर पड़ी है। ज़मींदारों का गुस्सा दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है। वे मथाई को अकारण तंग कर रहे हैं। पिलाई के समय वे सारा पानी अपने खेतों में छोड़ते हैं और मथाई के खेत की तरफ जाने वाली पानी की नालियाँ बन्द कर देते हैं।

अन्त में, मथाई इतना निराश हो गया कि उसे लगने लगा कि उसके दोस्त भी दुश्मनों से जा मिले हैं। उसने झुककर खेत की मिट्टी उठाई और उसे छाती के पास लाकर बोला, "माँ, तू मेरा साथ कभी मत छोड़ना। मैंने कभी तेरे साथ कुछ गलत नहीं किया है। यहाँ मैंने अपना खून बहाया है। संकट की इस घड़ी में मेरा साथ निभाना।"

दूसरे खेतों में धान के पौधे रोपे जा चुके थे। सिर्फ मथाई का खेत ऐसा था जिसमें पौधे घुटनों तक बड़े हो गए थे, लेकिन उन्हें लाकर खेत में रोपा नहीं जा सकता था। ज़मींदारों ने मज़दूरों को उसके खेत में काम करने से रोक दिया था। अब वह किसकी तरफ देखे? मथाई ने दक्षिण दिशा में स्थित कब्रगाह की तरफ देखा और अपनी छाती कूटी। पुरखों की आत्माएँ परेशान भटक रही थीं। हे भगवान! ये मेरी ज़मीन है जो मैंने अपने बेटे के पैसों से खरीदी है। मथाई बुदबुदाया। रोपाई के लिए पहले ही काफी देर हो चुकी थी। अब कौन उसकी मदद के लिए आएगा? उसका बेटा भी बहुत दिनों से नहीं आ पाया है।

"अन्ना! उठो अन्ना! चलो अपन खुद रोपाई करते हैं। नहीं तो वे हमारे खेत को पानी से भर देंगे और हमारे सारे पौधे सड़ जाएँगे। मेरा पैसा, मेरे सपने, मेरी माटी! ओ पिता! ओ माँ! मेरे परिवार की शक्ति बनो। श्मशान की अग्नि मेरा साथ दो!" मथाई दक्षिण दिशा में मुँह उठाकर चिल्लाया।

बुखार में तपती अन्ना रसोई से बरामदें में आई। एक मुर्गे को उठाया और पश्चिम में स्थित आर्थनाल गिरजाघर की तरफ मुँह उठाकर बोली, "इस साल चर्च में इसे चढ़ाऊँगी। मेहरबानी करके मेरे आदमी को मत सताओ!"

अगली सुबह, बरसों बाद अन्ना खेत में काम करने गई। मथाई ने खेत की क्यारियाँ ठीक की। छोटा बच्चा अन्ना की मदद में लगा रहा। लेकिन देर रात तक भी वे काम पूरा नहीं कर पाए। अन्ना खेत में गिर पड़ी। "अन्ना! उठो अन्ना! हमें काम पूरा करना है।" मथाई हताशा से चूर-चूर था। फसल बर्बाद...सपना टूट गया।

कल वो लोग पानी खोल देंगे। कोपलें बर्बाद हो जाएँगी। वह छाती मलते हुए इधर से उधर चक्कर लगाता रहा। अन्ना बोली, "माता मरियम की जय हो! फूले हुए चावल, गुड़ और फूल चढ़ाऊँगी मुथान को।"

मथाई को गुस्सा आ गया। "यह खेत मेरे बेटे के पसीने की कमाई से खरीदा गया था। वैसे भी यह मेरा खेत है। पहले किसी और का रहा होगा लेकिन मैंने बरसों की कड़ी मेहनत से इसे सँवारा है। हे पूर्वजों! क्या तुम ठीक इसी स्थान पर काम करते हुए नहीं गुज़रे थे? क्या तुम मेरी परीक्षा ले रहे हो? अगर हाँ, तो आज के बाद मैं तुम्हें कोई चढ़ावा नहीं चढ़ाऊँगा।"

कब्रगाह का चिराग अभी बुझा नहीं था।

उस रात मथाई सो नहीं सका। क्यों न खेत पर चलकर एक नज़र देखा जाए, उसने सोचा। कल तक तो सब उजड़ जाएगा। अन्ना को कुछ भी बताए बिना वह खेत की तरफ निकल पड़ा। किसी पेड़ पर कोई उल्लू तीन बार बोला। पक्षियों का एक झुण्ड उसके सिर पर चक्कर काट रहा था। जल्द ही सबेरा हो जाएगा। "ये काहे की आवाज़ थी?" उसने सोचा, "दबी-दबी-सी आवाजें...जैसे कई लोग आपस में बातें कर रहे हों।" उसने अपनी चाल तेज़ कर दी और मेड़ों के साथ-साथ खेत की तरफ बढ़ने लगा। उसने अँधेरे में ध्यान से देखा। लोगों के बोलने की आवाज़ें उसके खेत से ही आ रही थीं। "हे भगवान! मेरा खेत! और लोगों से भरा हुआ, जैसे कोई त्योहार हो! और देखो! उनमें ज़्यादातर तो औरतें हैं! सिर्फ एक-दो मर्द हैं, और वे मेड़ ठीक कर रहे हैं। हे भगवान! कुछ औरतें तो गर्भवती हैं उनका नौवाँ महीना चल रहा है। वे झुकतीं हैं तो उनका पेट ज़मीन को छूने लगता है। ये औरतें मेरे खेत में क्या कर रही हैं?"

"ओहो! वहाँ कुछ बच्चे भी हैं। ये किनके बच्चे होंगे? और कुछ बूढ़ी औरतें भी हैं। बहुत बूढ़ी। वे सब काम में लगी हुई हैं। एक के बाद एक कतार में पौधे रोप रही हैं। जब भी कोई कतार खत्म होती है वे कमर सीधी करने उठ खड़ी होती हैं। हे भगवान! ये सब तो कब्रगाह की तरफ जा रही हैं।"

मथाई देखता रहा – उनमें से अन्तिम लड़खड़ाती औरत को, झुण्ड बनाते बच्चों को, खाँसते-खखारते मर्दों को कब्रगाह में जाकर गायब हो जाते। रोपाई का काम पूरा हो चुका था। काँपते-कँपकपाते मथाई मुड़ा और घर की तरफ दौड़ पड़ा।

उसने अन्ना को पुकारा और गिर पड़ा।

इतिहास की आत्माएँ
ITIHAAS KI AATMAEN

बादशाह, मेरा दोस्त

शेफाली झा
चित्र: चिनन

प्यारी आत्माएँ

मूल मलयालम कहानीः रेखराज
चित्र: के पी रेजी

डिज़ाइन: चिनन
अँग्रेज़ी से अनुवाद: स्वयं प्रकाश
शृंखला सम्पादक: सुशील शुक्ल

Anveshi
डिफरेंट टेल्स: स्टोरीज़ फ्रॉम मार्जिनल कल्चर्स एंड रीजनल लैंग्वेज, हैदराबाद के अन्वेषी रिसर्च सेंटर फॉर विमेन्स स्टडीज़ की एक पहल।
अँग्रेज़ी तथा मलयालम में डी सी बुक्स, कोट्टायम, केरल द्वारा और तेलुगू में हैदराबाद के अन्वेषी रिसर्च सेंटर फॉर विमेन्स स्टडीज़ द्वारा प्रकाशित।

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
संस्करण: जनवरी 2021/ 2000 प्रतियाँ
कागज़: 90 gsm मेट आर्ट और 210 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

ISBN: - 978-81-946518-4-0
मूल्य: ₹ 110.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउण्डेशन
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल 462 026 (म प्र)
फोनः +91 755 297 7770-71-72-73
वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल; फोनः +91 755 268 7589

डिफरेंट टेल्स सीरीज़
की अन्य किताबें

सिर का सालन

फिर जीत गई ताटकी और दिलेर बड़ेय्या

बोरेवाला

स्कूल की अनकही कहानियाँ

दो नाम वाला लड़का तथा अन्य कहानियाँ

माँ

मटके में चाँद

"इतिहास मुझे पसन्द नहीं करता।" क्या वह रहस्यमय दोस्त जिससे आदिल मस्जिद में मिलता है इस अजीब-सी समस्या का हल ढूँढने में उसकी मदद करेगा?

मेरा दोस्त, शहंशाह

मथाई बड़ी परेशानी में है। अंकुरों के सूखकर खत्म होने से पहले खेत बोने में उसकी मदद कौन करेगा? जवाब वहाँ से आता है जहाँ से कोई उम्मीद न थी।

नजारू
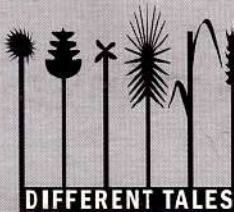
मूल्य: ₹ 110.00

डिफरेंट टेल्स क्षेत्रीय भाषा की कहानियाँ ढूँढ-ढूँढकर निकालता है, ऐसी कहानियाँ जो ज़िन्दगी की बातें करती हैं – ऐसे समुदायों के बच्चों की कहानियाँ जिनके बारे में बच्चों की किताबों में बहुत कम पढ़ने को मिलता है। कई सारी कहानियाँ लेखकों के अपने बचपन का बयान करते हुए बड़े होने के अलग-अलग ढंगों को प्रस्तुत करती हैं, प्रायः एक प्रतिकूल दुनिया में जहाँ वे हमजोलियों, पालकों और अन्य वयस्कों से नए सम्बन्ध बनाते हैं। ज़ायकेदार व्यंजनों, छोटे-छोटे जुगाड़ खेलों, स्कूल के अनापेक्षित सबकों और दिलदार दोस्तियों के माध्यम से ये कहानियाँ हमें एक दिलकश सफर पर ले जाती हैं।